



ओडिसी नृत्य

//



ओडिसी (ओडिशा)

“

- ▶ आधार: नाट्यशास्त्र तथा अभिनय दर्पण।
- ▶ निरूपण: लालित्य, कामुकता एवं सौंदर्य से पूर्ण।
- ▶ इसे 'सचल मूर्ति' के रूप में भी जाना जाता है।
- ▶ ओडिसी नृत्य के प्रारंभिक उदाहरण: उदयगिरी-खंडगिरी की गुफाएँ।
- ▶ मुख्य रूप से 'महारियों' द्वारा किया जाता है।
- ▶ संरक्षण: राजा खारवेल द्वारा।
- ▶ हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, ओडिसी नृत्य की संगत करता है।

”

“

ओडिसी नृत्य के प्रमुख तत्व

- ▶ मंगलाचरण:
नृत्य की शुरुआत।
इसमें पृथ्वी माता को पुष्प अर्पण।
- ▶ बाटू नृत्य:
इसमें त्रिभंग और चौक मुद्राएँ शामिल होती हैं।
- ▶ पल्लवी:
चेहरे के भावों की प्रमुखता।
संगीतात्मक संयोजन का दृश्यात्मक प्रदर्शन।
- ▶ थारिङ्गम:
समापन से पहले शुद्ध नृत्य।

”

“

प्रसिद्ध प्रतिपादक

- गुरु पंकज चरण दास
- गुरु केलुचरण महापात्र
- सोनल मानसिंह
- शेरॉन लोवेन (अमेरिका)
- आनंदिनी दास (अर्जेंटीना)

”

“

नरतला

- ▶ ओडिसी नृत्य का एक रूप।
- ▶ इसका प्रदर्शन राज दरबारों में किया जाता था।
- प्रदर्शन के प्रमुख विषय**
- ▶ भगवान विष्णु के विभिन्न अवतार।
- ▶ जयदेव द्वारा रचित गीत-गोविन्द के पद।
- दो प्रमुख मुद्राएँ**
- ▶ त्रिभंग: शरीर गले, घड़ और घुटने पर मुड़ा होता है।
- ▶ चौक: यह एक वर्ग (चौकोर) की स्थिति है।

”

“

समापन या अंतिम अंश के दो प्रकार

- ▶ मोक्ष: मुक्ति दर्शाने वाली आनंदपूर्ण लय-ताल।
- ▶ त्रिखंड मजुरा: कलाकार देवताओं, दर्शकों और मंच से बाहर निकलने की अनुमति लेते हैं।
- परिधान**
- सुपरिष्कृत केश-विन्यास
- चाँदी के आभूषण
- लंबा कंठहार



वाद्ययंत्र

ढोल

पखावज

बाँसुरी

सितार

मंजीरा

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/odissi-dance>

